

७ द्रव्यप्रमाणानुगम-विषयसूची

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
१	विषयकी उत्थानिका	१-१०		कानन्त, एकानन्त, उभयानन्त, विस्तारानन्त, सर्वानन्त और	
१	द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश- भेद-कथन	१	१९	भावानन्तके भेद और स्वरूप प्रकृतिमें गणनानन्तसे प्रयोजनकी	१५-१६
२	द्रव्यशब्दकी निरुक्ति और भेद	२	२	सिद्धि और शेष दश अनन्तोंके	
३	जीवद्रव्यका साधारण और असाधारण लक्षण	२	२०	कथन करनेका हेतु गणनानन्तके तीन भेद-परीत, युक्त	१६-१७
४	अजीवद्रव्यकेरूपी और अरूपी भेद वा उनके लक्षण	२-३	२१	और अनन्तानन्त मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें विवक्षित	१८
५	द्रव्यप्रमाणानुगममें प्रकृत द्रव्यका निर्देश	४	२२	अनन्तानन्तका प्रतिपादन अनन्तानन्तके जघन्यादि तीन भेद,	१८
६	प्रमाण शब्दकी निरुक्ति तथा द्रव्य- प्रमाण शब्दका समास-विच्छेद	४-५		तथा मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें मध्यम अनन्तानन्तके ग्रहणका	
७	द्रव्यका लक्षण	५-६		परिकर्मके प्रमाणपूर्वक प्रतिपादन	१९
८	छहों समासोंके लक्षण व उदाहरण	६-७	२३	अथवा, मिथ्यादृष्टिराशि तीन वार	
९	संख्याकी सर्वथा एकरूपताका परिहार	७		वर्गित-संवर्गितराशिसे अनन्तगुणी तथा छह द्रव्यप्रक्षिप्तराशिसे	
१०	द्रव्यप्रमाणानुगमका अर्थ	८		अनन्तगुणी हीन है, इसका सोप-	
११	निर्देशका स्वरूप और उसके भेदों- का स्पष्टीकरण	८-१०		पत्तिक प्रतिपादन और इन राशि- योंके उत्पत्तिक्रमका प्ररूपण	१९-२६
			२४	कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव-	

२		राशिका निरूपण तथा क्षेत्र - प्रमाणके पूर्व कालप्रमाणके प्रति- पादनकी सार्थकता		२७
ओघसे द्रव्यप्रमाण निर्देश	१०-१२०	२५	कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव-	
१२ मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण- प्ररूपण	१०		राशिकी गणना करनेका प्रकार तथा इस गणनामें केवल अतीत-	
१३ अनन्तके ११ भेद, नामानन्त और स्थापनान्तका स्वरूप	११		कालके ग्रहणका प्रतिपादन	२८-२९
१४ द्रव्यानन्तके भेद	१२	२६	अतीतकालसे मिथ्यादृष्टिराशि बडी है, इसका सोलह-प्रतिक	
१५ आगम और आप्तका लक्षण	१२		अल्पबहुत्वसे समर्थन	३०-३१
१६ आगम द्रव्यानन्तका स्वरूप	१२	२७	क्षेत्रकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण-प्ररूपण, तथा क्षेत्रप्रमाणके	
१७ नोआगम द्रव्यानन्तके भेद, उनका क्रम नं. विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
स्वरूप और तद्विषयक शंका- समाधान	१३-१५		पूर्व भावप्रमाणके प्रतिपादन न करनेका कारण	३२
१८ शाश्वतानन्त गणनान्त अप्रेदिश- २८ क्षेत्रकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टिराशिके मापनेका प्रकार	३२		गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार ४४ द्विरुपधारामें गृहीत उपरिम विकल्प	५४
२९ लोक, जगत्श्रेणी और राजुका स्वरूप	३३	४५	घनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प	५७
३० मध्यलोक-विस्तारके संबंधमें मत- भेद तथा धवलाकारका तत्संबंधी सयुक्तिक निणर्ण	३४-३८	४६	घनाघनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प	५८
३१ क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपणकी सार्थकता	३८	४७	गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें तीनों धाराओंकेद्वारा मिथ्यादृष्टि	
३२ भावनाप्रमाणका स्वरूप व उसके			राशिकी उत्पत्ति	५९

भेद	३८-३९	४८ गृहितगुणकार उपरिम विकल्पमें	
३३ सूत्रमें भावप्रमाणके नहीं कहनेमें		तीनों धाराओंकेद्वारा मिथ्यादृष्टि	
हेतु	३९	राशिकी उत्पत्ति	६१
३४ भावप्रमाणकी अपेक्षा खंडित, भाजित, विरलित और अपहृत नामक गणितकी प्रक्रियाओंकेद्वारा		४९ सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर संयता-संयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण	६३
मिथ्यादृष्टिराशिके लानेकी विधी	३९	५० सासादनसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण	६३
३५ वर्गस्थानमें खंडित आदिकेद्वारा मिथ्यादृष्टिराशिके प्रमाण-निरूपणकी प्रतिज्ञा	४०	५१ क्षेत्र और कालकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा नहीं करनेका कारण	६३
३६ मिथ्यादृष्टिराशि लानेकेलिए ध्रुव-राशिकी स्थापना व उसकेद्वारा खंडित, भाजित, विरलित और अपहृत विधिओंसे मिथ्यादृष्टि-राशिका प्रमाण-प्ररूपण	४१	५२ कालप्रमाणसंबंधी आवली, उच्छ्वास, स्तोक, लव, नाली, मुहूर्त, भिन्न-मुहूर्त और अन्तर्मुहूर्त का स्वरूप	६५
		५३ एक मुहूर्तमें प्राणोंकी संख्यासिद्धि और मतान्तरका खंडन	६६
३७ मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण तथा तत्संबंधी गणितका शास्त्रीय कारण	४२-४६	५४ असंयतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत अवहारकालोंका कथन	६८
३८ गणितसंबंधी नौ करण-गाथाएं	४६-४९	५५ ओघसम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंका अवहारकाल आवलीके असंख्यातवें	
३९ सर्व जीवराशिमैंसे मिथ्यादृष्टि और सिद्ध-तेरस गुणस्थानोंके प्रमाण पृथक् करनेकी निरुक्ति	५१	भाग न होकर 'असंख्यात आवली प्रमाण है' इस बातका समर्थन व विरोध-परिहार	६८
४० विकल्पके अधस्तन और उपरिम भेद, तथा वर्गधारामें मिथ्यादृष्टि राशि लानेकेलिए अधस्तन विकल्पकी असंभवता	५२	५६ सासादनसम्यग्दृष्टि आदि राशियोंके अनवस्थित रहने पर भी	

उनके निश्चित प्रमाण लानेके लिए

४१ घनधारामें अधस्तन विकल्प	५२	निश्चित भागहारका समर्थन	७०
४२ घनाघनधारामें अधस्तन विकल्प	५३		
४३ उपरिम विकल्पके तीन भेद-गृहित,			
क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं. विषय पृष्ठ नं.
५७ खंडित, भाजित, विरलित, अपहृत,		पत्तिके अनुसार उपशामकों और	
प्रमाण कारण और निरुक्तिवेद्वारा		क्षपकोंकी संख्याका मतभेद	९४
वर्गधारामें सासादनसम्यग्दृष्टियोंके		७१ एक एक गुणस्थानमें उपशामक	
प्रमाणका प्ररुपण	७१	और क्षपकोंका संयुक्त प्रमाण	९५
५८ अधस्तनविकल्पमें द्विरुपवर्गधारा		७२ सयोगिकेत्रलियोंका प्रवेश व	
आदिका आश्रय लेकर सासादन-		कालकी अपेक्षा प्रमाण	९५
सम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणका प्ररुपण	७४	७३ सयोगिकेत्रली जिनोंकी लक्षपृथक्त्व	
५९ उपरिमविकल्पके तीनों भेदोंमें		संख्याके निकालनेका विधान	९५
द्विरुपवर्गधारा आदिका आश्रय		७४ यथाख्यातसंयतोंका, सर्वसंयत-	
लेकर सासादनसम्यग्दृष्टियोंके		राशिका तथा उपशामक और	
प्रमाणका प्ररुपण	७७	क्षपकोंका प्रमाण	९७
६० सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्य-		७५ प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंकी	
ग्दृष्टि और संयतासंयत की		राशिके निकालनेका एक नया	
प्ररुपणा खंडित आदि विधिसे		प्रकार	९७
सासादनसम्यग्दृष्टिकी प्ररुपणाके		७६ दक्षिणप्रतिपत्तिवाली सर्व संयतोंकी	
समान उनके पृथक् पृथक् अवहार-		संख्यापर आक्षेप और समाधान	९८
कालके द्वारा करनेका निर्देश	८७	७७ उत्तरप्रतिपत्तिकी अपेक्षा प्रमत्त-	
६१ सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके अव-		संयत आदिका प्रमाण	९९
हारकाल, प्रमाण और पत्योपमकी		७८ ओध भागाभाग प्ररुपण	१०१
अंकसंदृष्टि	८७	७९ अल्पबहुत्वके कथनकी प्रतिज्ञा	

६२ प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण	८८	और स्वतंत्र अल्पबहुत्व अनुयोग	
६३ अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण	८९	द्वारकेहोते हुए भी यहाँ उसके	
६४ अप्रमत्तसंयतोंकेप्रमाणसे प्रमत्त- संयतोंकेदूने प्रमाणका कारण	९०	कहनेका कारण	११४
६५ चारों उपशामकोंका प्रवेशकी अपेक्षा प्रमाण	९०	८० अल्पबहुत्वकेदो भेद-स्वस्थान और सर्व परस्थान	११४
६६ चारों उपशामकोंका कालकी अपेक्षा प्रमाण व उनकी संख्याकेजोडनेका प्रकार	९१	८१ मिथ्यादृष्टिराशिमैं स्वस्थान अल्प- बहुत्वका अभाव	११४
६७ चारों क्षपक और अयोगिकेव्रलीका प्रवेशकी अपेक्षा प्रमाण	९२	८२ सासादनादि राशिओंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व	११४
६८ चारों क्षपक और अयोगिकेव्रलीका कालकी अपेक्षा प्रमाण व उनकी संख्याकेजोडनेका प्रकार	९३	३ ८३ ओघ सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व	१८६
६९ उपशामकों और क्षपकोंकी संख्याके लानेका करणसूत्र	९४	९ गतिमार्गणा (नरकगति)	१२१-४८७ १२१-३०५
७० उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिण प्रति- पत्तिकेअनुसार उपशामकों और क्षपकोंकी संख्याका मतभेद	९४	८४ सामान्य नारक मिथ्यादृष्टिओंका प्रमाण	१२१
८५ असंख्यातकेनामादि ग्यारह भेद और उनका स्वरूप	१२३-१२५	कारण, निरुक्ति और विकल्पके द्वारा उक्त राशिकी प्ररुपणा	१५१
८६ प्रकृतमें गणना संख्यातसे प्रयोजन क्रम नं. विषय पृष्ठ नं.		९९ सासादनसे लेकर असंयत- क्रम नं. विषय पृष्ठ नं.	
तथा शेष असंख्यातोंकेवर्णनकी सार्थकता	१२५	सम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य नारकियोंका	

८७ गणनासंख्यातके जघन्यपरीता- संख्यात आदि नौ भेद, तथा प्रकृतमें मध्यम असंख्यातासंख्यातका ग्रहण	१२६	प्रमाण १०० गुणस्थान-प्रतिपन्न सामान्य नारकियोंको गुणस्थान-प्रतिपन्न ओघप्रमाणके समान मान लेनेपर	१५६
८८ तीन वार वर्गित संवर्गितराशिसे असंख्यातगुणी तथा छह द्रव्य प्रक्षिप्तमराशिसे असंख्यातगुणी हीन राशिसे प्रयोजन और उक्त राशियोंका स्वरूप-निदर्शन	१२८	आनेवाले दोषका परिहार १०१ ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि-अवहार कालके आश्रयसे गुणस्थान प्रतिपन्न देव, तिर्यच और नारकियोंके प्रमाण लानेके लिए	१५६
८९ सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंका कालकी अपेक्षा प्रमाण व हेतु	१२९	अवहारकाल उत्पन्न करनेकी विधि और उनका प्रमाण	१५७
९० क्षेत्रप्रमाणसे पहले काल प्रमाणके वर्णनकी सार्थकता	१३०	१०२ प्रथम पृथिवीके नारकियोंका प्रमाण	१६१
९१ नारक मिथ्यादृष्टियोंकी कालकी अपेक्षा गणना करनेका प्रकार	१३१	१०३ सामान्य नारकोंके प्रमाण समान प्रथम पृथिवीके नारकोंका प्रमाण	
९२ नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१३१	माननेपर उत्पन्न होनेवाली आपत्तिका परिहार और	
९३ नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंकी विष्वंभसूचीका प्रमाण	१३३	विशेषताका प्रतिपादन १०४ प्रथम नरकके मिथ्यादृष्टि	१६१
९४ सूत्रपठित 'अंगुल' शब्दसे सूच्यंगुलके ग्रहणका सप्रमाण समर्थन	१३४	नारकोंकी विष्वंभसूचि और अवहारकाल	१६२
९५ वर्गस्थानमें खंडित आदिके द्वारा विष्वंभसूचीका प्ररूपण	१३५	१०५ प्रथम नारकोंका प्रकारान्तरसे अवहारकाल	१६४
९६ नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण लानेके लिए विष्वंभसूचीके बलसे भागहारकी उत्पत्ति	१४१	१०६ प्रत्येक पृथिवीके प्रति अवहार- काल, प्रक्षेप शलाकाएं और विष्वंभसूचीमें अपनयनरूप-	

९७	वर्गस्थानमें प्रमाण आदिकेद्वारा अवहारकालका निरूपण	१४२	संख्याकेप्रमाणका प्रतिपादन १०७ सामान्य अवहारकालमात्र छह	१६६
९८	नारक सामान्य मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण अवहारकालसे किस प्रकार आता है, यह बताकर प्रमाण,		पृथिवियोंकेद्रव्यका आश्रय लेकर प्रत्येक पृथिविमें अवहारकाल प्रक्षेप- शलाकाएं निकालनेका विधान	१७१
१०८ उक्त सातों अवहारकालके मिलानकी विधि और उनसे प्रथम				
	पृथिवीकेअवहारुफालकेउत्पन्न करनेका क्रम	१७५	बतलानेवाली अंकसंदृष्टि १२१ दूसरीसे सातवीं पृथिवी तकके	१९७
१०९	प्रकारान्तरसे प्रथम पृथिवीके अवहारकाल लानेकी विधियां	१७७	मिथ्यादृष्टि नारकियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१९८
११०	छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१७९	१२२ जगत्श्रेणीकेकितन कितने वर्गमूलोंकेपरम्पर गुणा करनेसे	
१११	पांचवी, छठी और सातवीं क्रम नं. विषय		किस किस पृथिवीके नारक पृष्ठ नं. क्रम नं. विषय	पृष्ठ नं.
	पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१८०	मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है, इसका स्पष्टीकरण और उसमें	
११२	चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१८२	प्रमाण	२००
११३	तीसरीसे सातवीं तक पांच पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१८३	१२३ तृतीयादि पृथिवियोंकेद्रव्यके आश्रयसे दूसरी पृथिवीकेद्रव्य	
११४	दूसरीसे सातवीं तक छह पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१८४	उत्पन्न करनेकी विधि	२०१
११५	दूसरी आदि छह पृथिवियोंके संयुक्त अवहारकालसे प्रथम पृथिवीकेअवहारकालके लानेकी		१२४ प्रथम पृथिवीकेआश्रयसे दूसरी पृथिवीकेद्रव्य उत्पन्न करनेकी विधि और इसी प्रकार शेष पृथिवियोंकेद्रव्य उत्पन्न करनेकी	

विधि	१८६	सूचना	२०३
११६ हानिरूप और प्रक्षेपरूप अंकोंका ज्ञान करानेकेलिए अंकसंदृष्टि, तथा प्रक्षेपरूप राशिकी विधि	१८७	१२५ दूसरीसे सातवीं पृथिवीतक गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण	२०६
११७ राशिके हानिरूप विधानका अंकसंदृष्टि द्वारा स्पष्टीकरण	१९१	१२६ दूसरीसे सातवीं पृथिवी तक गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान	
११८ सामान्य अवहारकालके एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य द्रव्यके सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाण खंड करके उनका सातों पृथिवियोंमें विभाजन और इनपरसे प्रथम पृथिवीके अवहारकालकी उत्पत्ति	१९३	१२७ नरकगति-सम्बन्धी भागाभाग १२८ नरकगति-सम्बन्धी अल्पबहुत्व (तिर्यचगति)	२०६ २०७ २०८
११९ खंड शलाकाओंका आश्रय करके प्रकारान्तरसे प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहार कालकी उत्पत्ति	१९६	१२९ मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक सामान्य तिर्यचोंका प्रमाण, तथा सामान्य तिर्यचोंका प्रमाण ओघप्रमाणके समान माननेपर आनेवाले दोषका परिहार	२१५
१२० नरकगतिके सामान्य और विशेषरूपसे अवहारकाल, विष्वम्भसूची और प्रक्षेप अवहारकाल सूची और प्रक्षेप अवहारकाल बतलानेवाली अंकसंदृष्टि	१९७	१३० सामान्य तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशि और गुणस्थान प्रतिपन्न सामान्य तिर्यचोंका अवहारकाल	२१६
१३१ जहाँ राशिका अनन्तरूप प्रमाण बताया है वहाँ भी कालप्ररूपणासे द्रव्यप्ररूपणाकी सूक्ष्मता सिद्ध		१४३ पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंका अवहारकाल और उसके विषयमें मतभेद	२३०

होती है, इसका स्पष्टीकरण	२१७	१४४ पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टि योनि-			
१३२ पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टियोंका		द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाण	२१७	मतियोंके अवहारकालका खंडित	
				आदिकेद्वारा कथन	२३२
१३३ असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणी-		उत्सर्पिणीकालोंके बीतनेपर पंचे-		१४५ पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि	
		न्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टिराशिके		योनिमतियोंकी विष्कंभसूची और	
				द्रव्यका वर्णन	२३७
क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
विच्छेद होनेकी शंकाका समाधान	२१८	१४६ सासादन गुणस्थानसे लेकर			
१३४ पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टि-		राशिका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण		संयतासंयत तक प्रत्येक गुणस्थानमें	
		व उनके अवहारकालकी सिद्धि	२१९	पंचेन्द्रियतिर्यच योनिमतियोंका	
				प्रमाण तथा उसे ओघवत्	
१३५ पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टियोंके		अवहारकालका खंडित आदिके		कहनेसे उत्पन्न होई आपत्तिका	
		द्वारा प्ररूपण	२२०	परिहार	२३७
				१४७ पंचेन्द्रियतिर्यच योनिमती असं-	
१३६ पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टियोंकी		विष्कंभसूचि और द्रव्यका समर्थन	२२५	यतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्या-स	
				दृष्टि, सासादन और संयता-	
१३७ सासादन गुणस्थानसे लेकर		संयतासंयत तक प्रत्येक गुणस्थानमें		संयतका अवहारकाल	२३८
		पंचेन्द्रिय तिर्यचोंका प्रमाण	२२६	१४८ पंचेन्द्रियतिर्यच पर्याप्तोंमें असं-	
				यतसम्यग्दृष्टि पुरुषवेदियोंसे	
१३८ द्रव्यप्रमाण आदिमें कथन करनेका		प्रयोजन व द्रव्यप्रमाण अन्य		असंयतसम्यग्दृष्टि स्त्रीवेदियोंके	
		प्रमाणोंसे स्तोक है, इसमें हेतु	२२७	और स्त्रीवेदियोंसे, नपुंसकेवेदि-	
				योंके उत्तरोत्तर कम होनेका	
१३९ द्रव्यप्रमाणसे कालप्रमाणके		सूक्ष्मत्वकी सिद्धि	२२८	कारण	२३८
				१४९ पंचेन्द्रियतिर्यच तीन वेदवाले सम्य	
१४० पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्या-				ग्मिथ्यादृष्टियोंसे पंचेन्द्रियतिर्यच	

दृष्टियों का क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण, तथा उनके अवहारकालका स्वीकरण	२२८	योनिमती असंयतसम्यग्दृष्टि जीव कम हैं, या अधिक हैं, इस विषयमें उपदेशका अभाव	२३८
१५० पंचेन्द्रियतिर्यच अपर्याप्तोंका			
१४९ सासादन गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तक पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्तोंका प्रमाण	२२९	द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण व अवहारकालका निरूपण	२३९
● पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण (मनुष्यगति)	२२९	और अल्पबहुत्व	२४०
१५२ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२४४	१६४ दो वेदवाले मनुष्य पर्याप्तोंका	
१५३ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल व खंडित आदिके द्वारा उसका कथन	२४६	१६५ बादालके घनप्रमाण मनुष्य पर्याप्तराशि है, इस मतका खंडन और सूत्रप्रतिपादित मतका समर्थन	२५४
१५४ मध्यम विकल्प और उपरिम विकल्पमें भेद	२४८	१६६ सासादनगुणस्थानसे लेकर संयतासंयततक प्रत्येक गुणस्थानमें पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण	२५९
१५५ मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहार कालका जगत्श्रेणीमें भाग देने पर रूप अधिक मिथ्यादृष्टिराशि आती है, इसमें प्रमाण	२४९	१६७ प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगकेव्रलि गुणस्थानतक	
१५६ ओज और युग्म राशियोंके भेद- क्रम नं. विषय		पृष्ठ नं. क्रम नं. विषय	पृष्ठ नं.

प्रभेद और उनके लक्षण	२४९	प्रत्येक गुणस्थानमें पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण	२६०
१५७ यहाँ जीवस्थानमें मनुष्य मिथ्या-दृष्टि अवहारकालका जगत्श्रेणीमें भाग देनेपर रूप अधिक सासादन-नादि तेरह गुणस्थानवर्ती अपन-यनराशि आती है, इसका समर्थन	२५०	१६८ मनुष्यनियोंमें मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवहारकाल निरूपण	२६०
१५८ मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालका कथन	२५१	१६९ सासादन गुणस्थानसे लेकर अयोगकेव्रली तक प्रत्येक गुणस्थानमें मनुष्यनियोंका प्रमाण, तथा गुणस्थान-प्रतिपन्न मनुष्यनी गुणस्थान-प्रतिपन्न सामान्य मनुष्योंके संख्यातवेँ भाग होती हैं, इसमें हेतु	२६१
१५९ सासादन गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य मनुष्योंका प्रमाण	२५१	१७० लब्धपर्याप्त मनुष्योंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२६२
१६० सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंके प्रमाणमें मतभेद	२५२		
१६१ प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेव्रली गुणस्थानतक मनुष्योंका प्रमाण	२५२	१७१ मनुष्यगतिसम्बन्धी भागाभाग और अल्पबहुत्व (देवगति)	२६४
१६२ पर्याप्त मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण और खंडित आदिकेद्वारा उसका कथन	२५३	१७२ सामान्यदेवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	२६६
१६३ पर्याप्त मनुष्यराशियोंसे गुणस्थान-प्रतिपन्नराशिके घटा देनेपर मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है, इसका समर्थन	२५४	१७३ संख्यात, असंख्यात और अनन्तके लक्षण व परस्पर भेद	२६७
		१७४ काल और क्षेत्रकी अपेक्षा सामान्य देव मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	२६८
		१७५ सासादन गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक	

प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य

देवोंका प्रमाण २६९

१७६ असंयतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्या-

दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि

देवोंका अवहारकाल २६९

देवोंका प्रमाण और भागहार २८०

१७७ भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य,

काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण २७०

१८८ आनत-प्राणत कल्पसे लेकर नव

ग्रैवेयक तक मिथ्यादृष्ट्यादि

१७८ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और

असंयतसम्यग्दृष्टि भवनवासियोंका

प्रमाण २७१

चारों गुणस्थानवर्ती देवोंका प्रमाण २८१

१८९ अनुदिशोंसे लेकर अपराजित

अनुत्तरविमानतक असंयतसम्य-

१७९ वानव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देवोंका

द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा

प्रमाण २७२

गृष्टि देवोंका प्रमाण २८१

१९० गुणस्थान-प्रतिपन्न सर्व देवोंके

अवहारकाल २८२

१८० वानव्यन्तर और योनिमतियोंके

अवहारकालमें मतभेद और

निर्णय २७३

१९१ आनतादि उपरिम गुणस्थान-

प्रतिपन्न देवोंका प्रमाण पल्यो-

पमकेअसंख्यातवें भाग है, यह

क्रम नं. विषय

पृष्ठ नं. क्रम नं. विषय

पृष्ठ नं.

१८१ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और

असंयतसम्यग्दृष्टि वानव्यन्तरोंका

प्रमाण २७४

वचन 'इसकेद्वारा अन्तर्मुहूर्तसे

पल्योपम अपहृत होता है ' ऐसा

विशेषित करकेक्यों कहा?

१८२ ज्योतिषी देवोंका प्रमाण व उस

प्रमाणको सामान्य देवराशिके

समान कहनेसे आनेवाले दोषका

परिहार २७५

इसकी सफलता २८५

१९२ सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवोंका

प्रमाण २८६

१९३ देवगतिसंबंधी भागाभाग २८६

१८३ ज्योतिषी देवोंका अवहारकाल २७६

१९४ देवगतिसंबंधी अल्पबहुत्व

२८८

१८४ सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण २७६	१९५ चतुर्गतिसंबंधी भागाभाग २९५
१८५ सौधर्म और ऐशान मिथ्यादृष्टि देवोंकी विष्कंभसूची २७७	१९६ चतुर्गतिसंबंधी अल्पबहुत्व २ इन्द्रियमार्गणा ३०५-३२९
१८६ खुदाबंधमें सामान्यसे जीवोंका प्रमाण कहते समय जो विष्कंभ- सूचियां बतलाई हैं, वे ही यहां विशेषरूपसे जीवोंका प्रमाण बताते समय कही गई हैं, अतः यह कथन परस्पर विरुद्ध है, इस प्रकार उत्पन्न हुई शंकाका समाधान २७८	१९७ सामान्य एकेन्द्रिय, बादर एके- न्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय और इन तीनोंके पर्याप्त तथा अपर्याप्तोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण ३०५
१८७ सौधर्म और ऐशान कल्पवासी सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण, तथा सनत्कुमारसे लेकर शतार सहस्त्रार कल्पतक मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण और भागहार २८०	१९८ उक्त नौ राशियोंकी ध्रुवराशियां ३०७
रिन्द्रिय पदसे किनका ग्रहण किया गया है, इसका स्पष्टीकरण ३११	१९९ खंडित आदिकेद्वारा उक्त नौ राशियोंका वर्णन ३०८
२०२ सयोगिकेन्द्रलीके पंचेंद्रियत्वका समर्थन ३११	२०० पर्याप्त और अपर्याप्त विकलत्रय जीवोंका द्रव्यकी अपेक्षा प्रमाण ३१०
२०३ विकलत्रय जीवोंका कालकी अपेक्षा प्रमाण ३१२	२०१ प्रकृतमें पर्याप्त और अपर्याप्त तथा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतु- रिन्द्रिय पदसे किनका ग्रहण किया गया है, इसका स्पष्टीकरण ३११
२०४ द्वीन्द्रियादि राशियां सर्वथा	२१३ अपर्याप्तकालमें गुणस्थान प्रतिपन्न जीव लब्ध्यपर्याप्त नहीं होते, इसका समर्थन ३१८
	२१४ इन्द्रियमार्गणाकी अपेक्षा भागाभाग ३१८
	२१५ इन्द्रियमार्गणाकी अपेक्षा अल्प- बहुत्व ३२२
	३ कायमार्गणा ३२९-३८६

आयसहित होनेसे विच्छिन्न नहीं होती हैं, फिरभी ये असंख्याता-संख्यात अपसर्पिणीयों और उत्सर्पिणियोंकेद्वारा विच्छिन्न होती हैं, ऐसे विरोधका परिहार ३१२	२१६ पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तैजस्कायिक, वायुकायिक, तथा बादरपृथिवीकायिक, बादर-
२०५ विकलत्रय जीवोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण ३१३	अप्कायिक, बादरतैजस्कायिक,
२०६ पंचेन्द्रियसामान्य और पंचेन्द्रिय-क्रम नं. विषय पृष्ठ नं.	क्रम नं. विषय पृष्ठ नं.
पर्याप्तोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण ३१४	बादरवायुकायिक, बादरवस्नपति-कायिक प्रत्येक शरीर तथा इन पांच बादरोंकेअपर्याप्त, सूक्ष्म-पृथिवीकायिक, सूक्ष्मअप्कायिक, सूक्ष्मतैजस्कायिक, सूक्ष्मवायु-कायिक, तथा इन चार सूक्ष्मोंके पर्याप्त और अपर्याप्त प्रमाण ३२९
२०७ विकलत्रयोंकेप्रमाण-प्रतिपादक सूत्रकेसाथ पंचेन्द्रियोंकेप्रमाणका प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं कहा, इसका स्पष्टीकरण ३१५	२१७ पृथिवीकायिकका अर्थ, प्रसंगसे कर्मकेभेदोंका उल्लेख, तथा बादरका स्वरूप ३३०
२०८ विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रियोंका अवहारकाल तथा द्रव्यप्रमाण ३१५	२१८ पृथिवीकायिक आदिकेप्रत्येक होते हुए उन्हें 'प्रत्येकशरीर' यह विशेषण क्यों नहीं लगाया जाता है, इसका स्पष्टीकरण ३३१
२०९ सासादन गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेव्रली गुणस्थान तक पंचेन्द्रियसामान्य और पंचेन्द्रिय-पर्याप्तोंका प्रमाण ३१७	२१९ सूक्ष्म, पर्याप्त और अपर्याप्त इनकेस्वरूपोंका स्पष्टीकरण ३३१
२१० जिनकी इन्द्रिया नष्ट हो गई है, ऐसे सयोगी अयोगी जिनको पंचेन्द्रिय कैसे कहा जा सकता है इस शंकाका समाधान ३१७	

२११ लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण ३१७	२२० विग्रहगतिमें विद्यमान वनस्पति- कायिक जीव प्रत्यकेहै या साधारण, इस शंकाका समाधान ३३२
२१२ लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रियोंकेप्रमाणका प्रतिपादक सूत्र पंचेन्द्रिय मिथ्या- दृष्टियोंकेप्रमाण प्रतिपादक सूत्रके साथ नहीं कहनेका कारण ३१८	२२१ तैजस्कायिक राशिकेउत्पन्न करनेकी विधि ३३४ २२२ चौथीवार कितनी गुणकारशला- काओंकेजानेपर तैजस्कायिक- राशि उत्पन्न होती है, इससे लेकर इस विषयमें अनेक मता- न्तरोंका उल्लेख, और कौन मत पूर्व परपरागत है, इसका समर्थन ३३७
	२३५ बादरतैजस्कायिक पर्याप्तराशिका प्रमाण ३५५
२२३ प्रकारान्तरसे तैजस्कायिकराशिके उत्पन्न करनेका विधान ३३९	२३६ बादरवायुकायिक पर्याप्तराशिका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण ३५५
२२४ खंडित आदिकेद्वारा तैजस्का- यिकराशिका वर्णन ३४०	२३७ बादरवायुकायिक पर्याप्तराशिका प्रमाण ३५६
२२५ तैजस्कायिकराशिसे पृथिवी, जल और वायुकायिकराशिकेउत्पन्न करनेकी प्रक्रिया, तथा इन्हीं तीनों राशियोंकेअवहारकाल ३४१	२३८ भेद-प्रभेदयुक्त वनस्पतिकायिक जीवोंका द्रव्य-प्रमाण ३५६ २३९ 'जिनका शरीर वनस्पतिरूप होता है उन्हें वनस्पतिकायिक कहते हैं' वनस्पतिकायिकका ऐसा अर्थ करनेपर विग्रहगतिमें स्थित जीवोंको वनस्पतिकायिकत्व
२२६ प्रकृतोपयोगी करणसूत्र तथा उक्त चारों राशियोंकेसूक्ष्म, सूक्ष्मपर्याप्त, सूक्ष्मअपर्याप्त और बादरराशिसम्बन्धी अवहार	

काल	३४२	कैसे प्राप्त होता है, इस शंकाका	
२२७ बादरतैजस्कायिक आदि राशि- योंके अर्धच्छेद	३४४	२४० भेद-प्रभेदयुक्त वनस्पतिकायिक	३५७
२२८ बादरतैजस्कायिकराशिकी सतरह प्रकारकी प्ररुपणा	३४४	जीवोंका काल और क्षेत्रकी प्रमाण	३५८
२२९ बादरवनस्पति प्रत्येक शरीर- राशिकी सतरह प्रकारकी प्ररुपण, तथा दूसरी बादरराशियोंकी पूर्वोक्त राशियोंके समान प्ररुपण करनेकी सूचना	३४६	२४९ पूर्वोक्त जीवराशियोंकी ध्रुव- राशियां २४२ त्रसकायिकसामान्य और त्रस- कायिकपर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३५९ ३६०
२३० सप्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पतिमें भेद	३४७	२४३ सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेव्रली गुणस्थानतक त्रसकायिक सामान्य और त्रस- कायिकपर्याप्तोंका प्रमाण	३६२
२३१ सूत्रमें बादर वनस्पति प्रत्येक शरीरका ही प्रमाण कहा, उनके भेदोंका नहीं, इसका कारण	३४८	२४४ लब्ध्यपर्याप्त त्रसकायिकोंका प्रमाण	३६२
२३२ बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त, बादरअष्कायिक पर्याप्त और बादरवनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त राशियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३४८	२४५ लब्ध्यपर्याप्त त्रसकायिकोंका प्रमाण लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रियोंके प्रमाणके समान कहनेसे उत्पन्न	
२३३ उक्त तीनों राशियोंके भागहार	३५०	हुई आपत्तिका परिहार	३६३
२३४ बादरतैजस्कायिक पर्याप्तराशिका प्रमाण, अवहारकाल व खंडित आदिसे राशिका कथन	३५१	२४६ कायमार्गणासम्बन्धी भागभाग २४७ कायमार्गणासम्बन्धी अल्पबहुत्व	३६३ ३६५
४ योगमार्गणा	३८६-४९३		
२४८ पांचों मनोयोगी तथा सत्य			

उभय और असत्य इस तीन वचनयोगी जीवोंका प्रमाण	३८६	२६१ औदारिकमिश्रकाययोगी असंयत-सम्यग्दृष्टि और सयोगिकेव्रली	
२४९ उक्त आठ राशियां देवोंके संख्यातवें भाग क्यों हैं? इसका समर्थन	३८६	जिनोंका प्रमाण	३९७
२५० सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयततक उक्त आठों क्रम नं. विषय पृष्ठ नं.		२६२ वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवहारकाल	३९८
राशियोंका प्रमाण तथा उसका ओघप्ररूपणाकेसमान कथन करनेमें हेतु	३८७	२६३ वैक्रियिककाययोगी सासादन-सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि क्रम नं. विषय पृष्ठ नं.	
२५१ प्रमत्तसंयतसे लेकर सयोगिकेव्रली तक उक्त आठों राशियोंका प्रमाण	३८७	जीवराशिका प्रमाण व अवहारकाल	३९९
२५२ प्रमत्तसंयतादि गुणस्थानोंमें आठ राशियोंका प्रमाण ओघसमान न कहनेका कारण	३८८	२६४ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्या-दृष्टियोंका प्रमाण	४००
२५३ वचनयोगी और अनुभववचन-योगी मिथ्यादृष्टिजीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३८८	२६५ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादन-सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४०१
२५४ सासादनादि गुणस्थानवर्ती उक्त राशियोंका प्रमाण	३९०	२६६ आहारककाययोगी प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण	४०१
२५५ स्व-भेद-युक्त मनोयोगी, वचन-योगी और काययोगी जीवोंके अवहारकाल और जीवराशियां	३९०	२६७ आहारमिश्रकाययोगी प्रमत्त-संयतोंका प्रमाण व मतान्तर परिहार	४०२
२५६ काययोगी और औदारिककाय-योगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	३९५	२६८ कर्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व ध्रुवराशि	४०२
		२६९ कर्मणकाययोगी सासादन-सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४०३
		२७० कर्मणकाययोगी सयोगिजिनोंका	

२५७ सासादनगुणस्थानसे लेकर	प्रमाण	४०४
सयोगिकेब्रली तक काययोगी	२७१ योगमार्गणा सम्बन्धी भागाभाग	४०४
और औदारिककाययोगियोंका	२७२ योगमार्गणा सम्बन्धी अल्पबहुत्व	४०८
प्रमाण, धुवराशि तथा अवहार	५ वेदमार्गणा	४१३-४२४
काल	३९५ २७३ स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण,	
२५८ औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्या-	देवियोंकेप्रमाणकी खुद्दाबंधसे	
दृष्टियोंका प्रमाण और धुवराशि ३९६	सिद्धि और स्त्रीवेदियोंका	
२५९ औदारिककाययोगराशिकेसंख्या-	अवहारकाल	४१३
तर्वे भाग औदारिकमिश्रकाय-	२७४ सासादन सम्यग्दृष्टिसे लेकर	
योगराशिकेहोनेमें हेतु ३९६	संयतासंयत गुणस्थान तक	
२६० औदारिकमिश्रकाययोगी सासादन-	प्रत्येक गुणस्थानमें स्त्रीवेदियोंका	
सम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण और	प्रमाण	४१४
अवहारकाल	३९७ ६ कषायमार्गणा	४२४-४३६
२७५ स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि कम	२८८ क्रोध, मान, माया और लोभ-	
होनेका कारण ४१५	कषायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुण-	
२७६ प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनि-	स्थानसे लेकर संयतासंयत गुण-	
वृत्तिकरण उपशमक व क्षपकके	स्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें	
सवेदभाग तक स्त्रीवेदियोंका	जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४२४
प्रमाण ४१५	२८९ प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर	
२७७ पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	अनिवृत्ति गुणस्थान तक चारों	
व अवहारकाल ४१६	कषायवाले जीवोंका प्रमाण	४२८
२७८ सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर अनि-	२९० लोभकषायी उपशमक व क्षपक	
वृत्तिकरण उपशमक व क्षपकके	सूक्ष्मसांपरायिकसंयतोंका प्रमाण	४२९
सवेद भाग तक पुरुष वेदियोंका	२९१ अकषायी जीवोंमें उपशान्तकषाय-	
प्रमाण व अवहारकाल ४१६	वीतरागछद्मस्थोंका प्रमाण और	
क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
		क्रम नं.
		विषय
		पृष्ठ नं.

२७९ मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तकके नपुंसक वेदि- योंका प्रमाण व अवहारकाल ४१७	द्रव्यकर्म चार प्रकारका होनेसे चार भेदोंमें विभक्त मूल उपशान्तकषायराशि प्रत्येक प्रमाणको कैसे प्राप्त होते है, इस शंकाका समाधान	४३०
२८० प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशामक क्षपकके सवेद भाग तक नपुंसकवेदियोंका प्रमाण ४१८	२९२ अकषायी क्षीणकषायवीतराग छन्नास्थ और अयोगिकेव्रली जिनोंका प्रमाण	४३०
२८१ स्त्रीवेदी प्रमत्तदि राशिसे भी नपुं- सकवेदी प्रमत्तादि राशिके संख्यातवें भाग होनेका कारण ४१९	२९३ अकषायी सयोगिकेव्रली जिनोंका प्रमाण	४३९
२८२ अपगतवेदी उपशामकोंका प्रवेशकी अपेक्षा प्रमाण	२९४ कषायमार्गणासंबन्धी भागाभाग २९५ कषायमार्गणासंबन्धी अल्पबहुत्व	४३२ ४३३
२८३ उपशान्तकषायजीवके उपशामक संज्ञा कैसे है, इस शंकाका समाधान ४१९	७ ज्ञानमार्गणा २९६ मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि	४३६-४४६
२८४ अपगतवेदी उपशामकोंका संचय- कालकी अपेक्षा प्रमाण ४२०	जीवोंका प्रमाण, ध्रुवराशि और अवहारकाल	४३६
२८५ अपगतवेदी तीनों क्षपक और अयोगिकेव्रलियोंका प्रमाण ५२०	२९७ विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४३७
२८६ अपगतवेदी सयोगिकेव्रलियोंका प्रमाण ४२१	२९८ विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण	४३८
२८७ वेदमार्गणासंबन्धी भागाभाग व अल्पबहुत्व ४१९	२९९ मति, श्रुत और अवधिज्ञानी जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुण- स्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें स्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुण-	

३१४ चक्षुदर्शनी जीवोंमें सासादन-

३०० अवधिज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण ४४१	सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक के जीवोंका प्रमाण ४५४
३०१ मनःपर्ययज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतक जीवोंका प्रमाण ४४१	३१५ अचक्षुदर्शनीयोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण व ध्रुवराशि ४५५
३०२ केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण ४४२	३१६ अवधिदर्शनी जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल ४५५
३०३ ज्ञानमार्गणासंबन्धी भागाभाग ४४२	३१७ केवलदर्शनी जीवोंका प्रमाण ४५६
३०४ ज्ञानमार्गणासंबन्धी अल्पबहुत्व ४४४ ८ संयममार्गणा ४४७-४५२	३१८ श्रुतदर्शन और मनःपर्ययदर्शन क्यों नहीं होता है, इस शंकाका समाधान ४५६
३०५ संयमी जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली क्रम नं. विषय पृष्ठ नं. गुणस्थानतकका प्रमाण ४४७	३१९ ज्ञानमार्गणासंबन्धी भागाभाग क्रम नं. विषय पृष्ठ नं. ४५७
३०६ सामायिक और छेदोपस्थापना- संयतोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानका प्रमाण व दोनों संयतोंके भेदाभेद विषयक शंकाका समाधान ४४७	३२० ज्ञानमार्गणासंबन्धी अल्पबहुत्व १० लेश्यामार्गणा ४५९-४७१ ३२१ कृष्ण, नील और कापोत लेश्या- वालोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुण- स्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण व ध्रुवराशि ४५९

३०७ परिहारविशुद्धिसंयमवाले प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण ४४९	३२२ तेजोलेश्यावाले जीवोंमें मिथ्या-दृष्टि जीवोंका प्रमाण अवहार-काल ४६१
३०८ सूक्ष्मसाम्परायसंयमवाले उप-शमक व क्षपकोंका प्रमाण ४४९	३२३ तेजोलेश्यावाले जीवोंमें सासादन सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण ४६२
३०९ यथाख्यातसंयमी, संयमासंयमी और असंयमी जीवोंका पृथक् पृथक् प्रमाण ४५०	३२४ पद्मलेश्यावाले जीवोंमें मिथ्या-दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल ४६३
३१० संयममार्गणासंबन्धी भागाभाग ४५१	३२५ पद्मलेश्यावाले जीवोंमें सासादन गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण ४६३
३११ संयममार्गणासंबन्धी अल्पबहुत्व ४५१ ९ दर्शनमार्गणा ४५३-४५९	३२६ शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें मिथ्या-दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयता-संयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-स्थानमें जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल ४६३
३१२ चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण ४५३	३३९ उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असंयत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण ४७६
३१३ चक्षुदर्शनी जीव किसे कहते हैं, इस विषयका ऊहापोहात्मक शंका-समाधान ४५३	३४० सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्या-दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल ४७७
३२७ शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें प्रमत्त-संयत गुणस्थानसे लेकर सयोगि-केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण ४६५	३४१ सम्यक्त्वमार्गणासंबन्धी भागाभाग ४७९

३३८	लेश्यामार्गणासंबन्धी भागाभाग ४६६	३४२	सम्यक्त्वमार्गणासंबन्धी अल्प-	
३३९	लेश्यामार्गणासंबन्धी अल्पबहुत्व ४६७		बहुत्व	४७९
	११ भव्यमार्गणा ४७२-४७३	३४३	प्रमत्तसंयत वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे	
३३०	भव्यसिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि		क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत	
	गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेव्रली		जीव संख्यातगुणे कैसे हो सकते	
	गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें		है, इस शंकाका समाधान	४८०
	जीवोंका प्रमाण ४७२	१३	संज्ञीमार्गणा	४८२-४८३
३३१	अभव्यसिद्धिक जीवोंका प्रमाण ४७२	३४४	संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण	
३३२	भव्यमार्गणासंबन्धी भागाभाग		व अवहारकाल	४८२
	और अल्पबहुत्व ४७३	३४५	संज्ञी जीवोंमें सासादन गुण-	
	क्रम नं. विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं. विषय	पृष्ठ नं.
	१२ सम्यक्त्वमार्गणा ४७४-४८१		स्थानसे लेकर क्षीणकषायगुण-	
३३३	सम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयत-		स्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती	४८२
	सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर		जीवोंका प्रमाण	
	अयोगिकेव्रली गुणस्थानतक प्रत्येक	३४६	असंज्ञी जीवोंका द्रव्य, काल और	
	गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण ४७४		क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	४८३
		३४७	संज्ञीमार्गणासंबन्धी भागाभाग	
३३४	क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयत-		व अल्पबहुत्व	४८३
	सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर		१४ आहारमार्गणा	४८३-४८७
	उपशान्तकषाय गुणस्थानतकके	३४८	आहारक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि	
	जीवोंका प्रमाण ४७४		गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेव्रली	
३३५	क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत		गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें	
	संख्यात ही क्यों होते हैं, इस		आहारक जीवोंका प्रमाण व	
	शंकाका समाधान ४७५		धुवराशि	४८३
३३६	क्षायिकसम्यग्दृष्टि चारों क्षपक	३४९	अनाहारक जीवोंका प्रमाण,	

व अयोगिकेन्द्रली जिनोंका प्रमाण ४७५	ध्रुवराशि व अवहारकाल	४८४
३३७ क्षायिकसम्यग्दृष्टि सयोगिकेन्द्रली जिनोंका प्रमाण ४७६	३५० अनाहारक अयोगिकेन्द्रली जीवोंका प्रमाण ४८५	
३३८ वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयत- सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तकके जीवोंका प्रमाण ४७६	३५१ आहारमार्गणासंबन्धी भागाभाग ३५२ आहारमार्गणासंबन्धी अल्पबहुत्व	४८५ ४८५